RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
Foundation
missiongyan
कक्षा-12 इतिहास
हिंदी माध्यम
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
ARJUN BATCH
भक्ति सूफ़ी परम्पराएँ
Chapter-6 | Part-6

# आज क्या पढ़ेंगे ?

1. भाषा और संपर्क
2. सूफ़ी और राज्य
3. नवीन भक्ति पंथ
4. शंकरदेव
5. धार्मिक परंपराओं के इतिहासों का पुनर्निर्माण

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

'सूफी' → इस्लाम + रहस्यवाद
सरल

सफा
सूफ

संप्रदाय → 'चिश्ती'
→ अजमेर

(पीर) गुरु ---- शिष्य (मुरीद)
(शेख)

खानकाह
दरगाह
'उर्स'

सिलसिला

वलि / खलीफा
(उत्तराधिकारी)

→ आश्रम
(खानकाह)

→ सामाजिक
- समा (संगीत की महफिल)
- लंगर (खैरात)
- 'अन्य'

अजमेर
- → MBT
- → मालवा के सुल्तान
- → अकबर -14

## सूफी संत

### भाषा और संपर्क

- न केवल समा में चिश्तियों ने स्थानीय भाषा को अपनाया अपितु दिल्ली में चिश्ती सिलसिले के लोग हिंदवी में बातचीत करते थे।
- बाबा फरीद (खानकाह–अजोधन, पंजाब) ने भी क्षेत्रीय भाषा में काव्य रचना की जो गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है।

- अक्सर ख़ानक़ाहों में समा के दौरान ऐसे काव्यों का वाचन होता था।
- कुछ और रचनाएँ लोरीनामा और शादीनामा के रूप में लिखी गई।
- लिंगायतों द्वारा लिखे गए कन्नड़ के वचन और पंढरपुर के संतों द्वारा लिखे मराठी के अभंगों ने भी उन पर अपना प्रभाव छोड़ा।

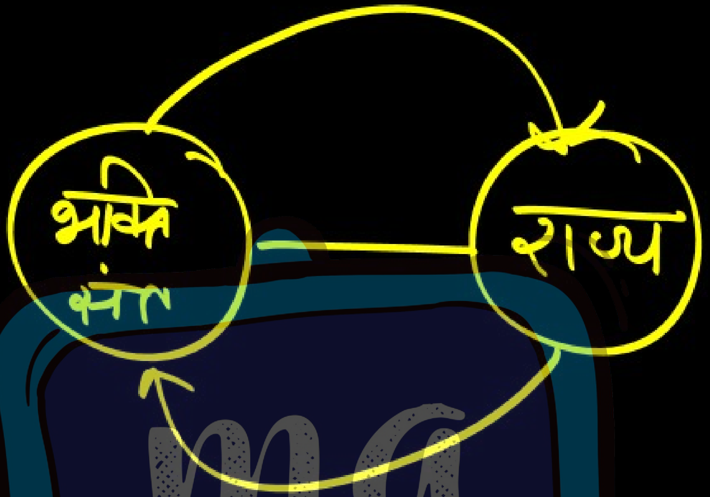
भक्ति
संत
राज्य

RIICO GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

## सूफी और राज्य

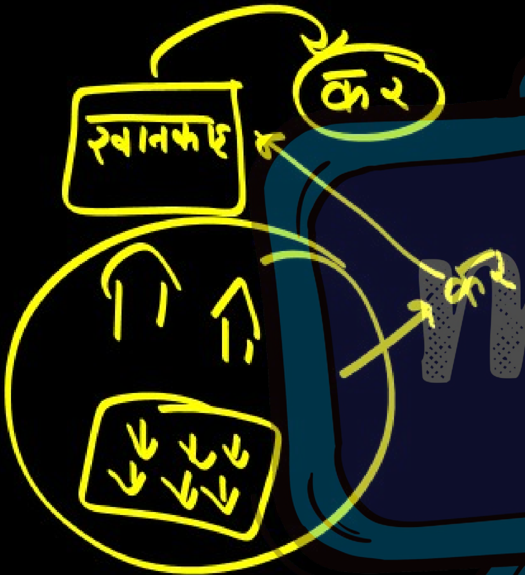


- चिश्ती संप्रदाय की एक और विशेषता संयम और सादगी का जीवन था जिसमें सत्ता से दूर रहने पर बल दिया जाता था।
- सत्ताधारी विशिष्ट वर्ग अगर बिना माँगे अनुदान या भेंट देता था तो सूफी संत उसे स्वीकार करते थे।
- सुल्तानों ने कईबार ख़ानक़ाहों को कर मुक्त (इनाम) भूमि अनुदान में दी।

- चिश्ती धन और सामान के रूप में दान स्वीकार करते थे किंतु इनको सँजोने के बजाय खाने, कपड़े, रहने की व्यवस्था और अनुष्ठानों जैसे समा की महफिलों पर पूरी तरह खर्च कर देते थे।
- इस तरह शेख के नैतिक अधिकार की पुष्टि होती थी और आम लोगों का उनकी ओर झुकाव बढ़ता था।

- सूफी संतों की धर्मनिष्ठा, विद्वता और लोगों द्वारा उनकी चमत्कारी शक्ति में विश्वास उनकी लोकप्रियता का कारण था।
- इन वजहों से शासक भी उनका समर्थन हासिल करना चाहते थे।
- जब तुर्कों ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की तो उलमा द्वारा शरिया लागू किए जाने की माँग को ठुकरा दिया गया।

- क्योंकि सुल्तान जानते थे कि उनकी अधिकांश प्रजा इस्लाम धर्म मानने वाली नहीं है।
- ऐसे समय सुल्तानों ने सूफी संतों का सहारा लिया जो अपनी आध्यात्मिक सत्ता को अल्लाह से उद्भूत मानते थे जो उलमा द्वारा शरिया की व्याख्या पर निर्भर नहीं थे।

- यह भी माना जाता था कि औलिया मध्यस्थ के रूप में ईश्वर से लोगों की ऐहिक और आध्यात्मिक दशा में सुधार लाने का कार्य करते हैं।
- इसलिए शासक अपनी कब्र सूफी दरगाहों और खानक़ाहों के नज़दीक बनाना चाहते थे।
- सुल्तानों और सूफ़ियों के बीच तनाव के उदाहरण भी मौजूद हैं।

- अपनी सत्ता का दावा करने के लिए दोनों ही कुछ आचारों पर बल देते थे जैसे-
  - झुक कर प्रणाम करना।
  - कदम चूमना।
- कभी-कभी सूफी शेखों को आडंबरपूर्ण पदवी से संबोधित किया जाता था।
- उदाहरणत - शेख निज़ामुद्दीन औलिया के अनुयायी उन्हें सुल्तान-उल-मशखे (अर्थात शेखों में सुल्तान) कह कर संबोधित करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

mg

नवीन पंथ

- निर्गुण
  - कबीर
  - बाबा गुरुनानक
- सगुण
  - मीराबाई

# नवीन भक्ति पंथ : उत्तरी भारत में संवाद और असहमति

- अनेक संत कवियों ने नवीन सामाजिक परिस्थितियों, विचारों और संस्थाओं के साथ स्पष्ट और सांकेतिक दोनों किस्म के संवाद कायम किए।
- इस काल के तीन प्रमुख और प्रभावकारी व्यक्तियों पर दृष्टिपात करेंगे।

कबीर, बाबा गुरु नानक और मीराबाई ।

RIICO GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

## कबीर :-

- कबीर (चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी)-

- इतिहासकारों ने उनके जीवन और काल का अध्ययन उनके काव्य और बाद में लिखी गई जीवनियों के आधार पर किया है। यह प्रक्रिया कई वजहों से चुनौतीपूर्ण रही है।
- कबीर की बानी तीन विशिष्ट किंतु परस्पर व्याप्त परिपाटियों में संकलित है।

1. कबीर बीजक कबीर पंथियों द्वारा वाराणसी तथा उत्तर प्रदेश के अन्य स्थानों पर संरक्षित है।

2. कबीर ग्रंथावली का संबंध राजस्थान के दादू पंथियों से है।

3. इसके अतिरिक्त कबीर के कई पद आदि ग्रंथ साहिब में संकलित हैं।

- लगभग सभी पांडुलिपियों का संकलन कबीर की मृत्यु के बहुत बाद में किया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कबीर की रचनाएँ अनेक भाषाओं और बोलियों में मिलती हैं।
- इनमें से कुछ निर्गुण कवियों की खास बोली संत भाषा में हैं।
- कुछ रचनाएँ जिन्हें उलटबाँसी (उलटी कही उक्तियाँ) के नाम से जाना जाता है, इस प्रकार से लिखी गई कि उनके रोज़मर्रा के अर्थ को उलट दिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कबीर बानी की एक और विशिष्टता यह है कि उन्होंने परम सत्य को वर्णित करने के लिए अनेक परिपाटियों का सहारा लिया।
- इस्लामी दर्शन की तरह वे इस सत्य को अल्लाह, खुदा, हज़रत और पीर कहते हैं।
- वेदांत दर्शन से प्रभावित वे सत्य को अलख (अदृश्य), निराकार, ब्रह्मन् और आत्मन् कहकर भी संबोधित करते हैं।

- कुछ कविताएँ इस्लामी दर्शन के एकेश्वरवाद और मूर्तिभंजन का समर्थन करते हुए हिंदू धर्म के बहुदेववाद और मूर्तिपूजा का खंडन करती हैं।
- अन्य कविताएँ ज़िक्र और इश्क के सूफी सिद्धांतों का इस्तेमाल 'नाम सिमरन' की हिंदू परंपरा की अभिव्यक्ति करने के लिए करती हैं।

क्या ये सभी कविताएँ कबीर द्वारा रची गईं? यह कहना मुश्किल है।

कबीर की समृद्ध परंपरा इस तथ्य की द्योतक है कि कबीर पहले और आज भी उन लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं जो सत्य की खोज में रूढ़िवादी, धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं, विचारों और व्यवहारों को प्रश्नवाचक दृष्टि से देखते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इस विषय पर आज भी विवाद है कि वह जन्म से हिंदू थे अथवा मुसलमान और यह विवाद अनेक संत जीवनियों में उभर कर आते हैं जो सत्रहवीं शताब्दी यानी उनकी मृत्यु के 200 वर्ष बाद से लिखी गईं।
- वैष्णव परंपरा की जीवनियों में कबीर (कबीर का अरबी में अर्थ है महान्) को जन्म से हिंदू कबीरदास बताया गया है।

- किंतु उनका पालन गरीब मुसलमान परिवार में हुआ जो जुलाहे थे और कुछ समय पहले ही इस्लाम धर्म के अनुयायी बने थे।
- इन जीवनियों में यह भी कहा जाता है कि कबीर को भक्ति का मार्ग दिखाने वाले गुरु रामानंद थे।
- इतिहासकारों का यह भी मानना है कि कबीर और रामानंद का समकालीन होना मुश्किल प्रतीत होता है।

## बाबा गुरु नानक और पवित्र शब्द

- बाबा गुरु नानक (1469-1539)→ इनका जन्म एक हिंदू व्यापारी परिवार में हुआ।
- उनका जन्मस्थल मुख्यत: इस्लाम धर्मावलंबी पंजाब का ननकाना गाँव था जो रावी नदी के पास था।

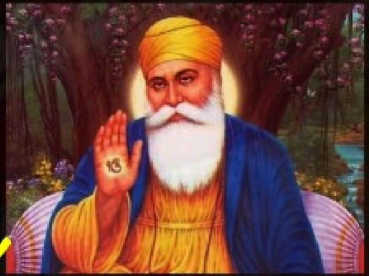

- उन्होंने फारसी पढ़ी और लेखाकार के कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

- उनका विवाह छोटी आयु में हो गया था किंतु वह अपना अधिक समय सूफी और भक्ति संतों के बीच गुज़ारते थे।
- उन्होंने दूर-दराज़ की यात्राएँ भी कीं।
- उन्होंने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया।
- धर्म के सभी बाहरी आडंबरों को उन्होंने अस्वीकार किया जैसे- यज्ञ, आनुष्ठानिक स्नान, मूर्ति पूजा व कठोर तप।

- हिन्दू और मुसलमानों के धर्मग्रंथों को भी उन्होंने नकारा।
- बाबा गुरू नानक के लिए परम पूर्ण रब का कोई लिंग या आकार नहीं था।
- उन्होंने इस रब की उपासना के लिए एक सरल उपाय बताया और वह था उनका निरंतर स्मरण व नाम का जाप।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने अपने विचार पंजाबी भाषा में शबद के माध्यम से सामने रखे।
- बाबा गुरु नानक यह शबद अलग-अलग रागों में गाते थे और उनका सेवक मरदाना रबाब बजाकर उनका साथ देता था।
- बाबा गुरु नानक ने अपने अनुयायियों को एक समुदाय में संगठित किया।

- उन्होंने अपने अनुयायी अंगद को अपने बाद गुरुपद पर आसीन किया; इस परिपाटी का पालन 200 वर्षों तक होता रहा।
- बाबा गुरु नानक किसी नवीन धर्म की संस्थापना नहीं करना चाहते थे, किंतु उनकी मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों ने अपने आचार-व्यवहार को सुगठित कर अपने को हिंदू और मुसलमान दोनों से पृथक चिह्नित किया।

- पाँचवें गुरु अर्जुन देव जी ने बाबा गुरु नानक तथा उनके चार उत्तराधिकारियों, बाबा फरीद, रविदास और कबीर की बानी को आदि ग्रंथ साहिब में संकलित किया। इन को "गुरबानी" कहा जाता है।
- सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दसवें गुरु गोबिन्द सिंह जी ने नवें गुरु तेग बहादुर की रचनाओं को भी इसमें शामिल किया और इस ग्रंथ को गुरु ग्रंथ साहिब कहा गया।

- गुरु गोबिन्द सिंह ने खालसा पंथ (पवित्रों की सेना) की नींव डाली और उनके पाँच प्रतीकों का वर्णन किया : बिना कटे केश, कृपाण, कच्छ, कंघा और लोहे का कड़ा।
- खालसा पंथ की स्थापना :- 13 अप्रैल 1699
- गुरु गोबिन्द सिंह के नेतृत्व में समुदाय एक सामाजिक, धार्मिक और सैन्य बल के रूप में संगठित होकर सामने आया।

RIICO GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

## मीराबाई, भक्तिमय राजकुमारी

- मीराबाई (लगभग पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी)-
  ये संभवत: भक्ति परंपरा की सबसे सुप्रसिद्ध कवयित्री हैं।

- मीराबाई मारवाड़ के मेड़ता जिले की एक राजपूत राजकुमारी थीं जिनका विवाह उनकी इच्छा के विरुद्ध मेवाड़ के सिसोदिया कुल में कर दिया गया।

- उन्होंने अपने पति की आज्ञा की अवहेलना करते हुए पत्नी और माँ के परंपरागत दायित्वों को निभाने से इनकार किया और विष्णु के अवतार कृष्ण को अपना एकमात्र पति स्वीकार किया।
- वह राजभवन से निकल कर एक परिब्राजिका संत बन गई।

- कुछ परंपराओं के अनुसार मीरा के गुरु रैदास थे जो एक चर्मकार थे।
- इससे पता चलता है कि मीरा ने जातिवादी समाज की रूढ़ियों का उल्लंघन किया।